**परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय – 6**

**अणुशक्तिनगर, मुंबई**

**कक्षा – 6 संस्कृत (रुचिरा – 1) दशम: पाठ:- कृषिका: कर्मवीरा:**

सूर्यस्तपतु मेघा: वा वर्षन्तु विपुलं जलम् |  
कृषिका कृषिको नित्य शीतकालेऽपि कर्मठौ || 1 ||

**अन्वय**: (Prose Order)

सूर्य: तपतु मेघा: वा विपुलं जलं वर्षन्तु | कृषिका कृषक: (च) शीतकाले अपि नित्यम् कर्मठौ (स्त:) |

**इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है** –

चाहे सूरज तपाये या बादल अत्यधिक बरसें किसान तथा उसकी पत्नी सदा सरदी में भी काम में लगे रहते हैं |

ग्रीष्मे शरीरं सस्वेदं शीते कम्पमयं सदा |  
हलेन च कुदालेन तौ तु क्षेत्राणि कर्षत: || 2 ||

**अन्वय**: (Prose Order)

ग्रीष्मे शरीरं सदा सस्वेदम् शीते (च) कम्पमयम् (अस्ति:) तौ तु हलेन कुदालेन च क्षेत्राणि कर्षत: |

**इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है** –

गरमी में शरीर पसीने से भरा होता और ठंड में कम्पनयुक्त अर्थात काँपता रहता है किन्तु फिर भी दोनों (किसान और उसकी पत्नी ) हल से अथवा कुदाल से खेतों को जोतते रहते हैं |

पादयोर्न पदत्राणे शरीरे वसनानि नो |  
निर्धनं जीवनं कष्टं सुखं दूरे हि तिष्ठति || 3 ||

**अन्वय**: (Prose Order)

पादयो: पदत्राणे न: (स्त:) शरीरे वसनानि न (सन्ति), निर्धनम् कष्टम् जीवनम् कष्टम् सुखं दूरे हि तिष्ठति |

**इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है** –

पैरों में जूते नहीं, शरीर पर कपड़े नहीं, निर्धन, कष्टमय जीवन है, सुख सदा ही दूर रहता है |

गृहं जीर्णं न वर्षासु वृष्टिं वारयितु क्षमम् |  
तथापि कर्मवीरत्वं कृषिकाणां न नश्यति || 4 ||

**अन्वय**: (Prose Order)

जीर्णम् गृहम् वर्षासु वृष्टिं वारयितुम् क्षमम् न (अस्ति) ; तथापि कृषिकाणां कर्मवीरत्वं न नश्यति |

**इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है** –

घर टूटा –फूटा (पुराना) है, वर्षा के समय बारिश (अर्थात बारिश का पानी) अन्दर आने से रोकने में असमर्थ हैं | तो भी किसानों की कर्मनिष्ठा नष्ट नहीं होती अर्थात् वे कृषि के लिए तत्पर रहते हैं |

तयो: श्रमेण क्षेत्राणि सस्यपूर्णांनि सर्वदा |  
धरित्री सरसा जाता या शुष्का कण्टकावृता|| 5 ||

**अन्वय**: (Prose Order)

तयो: श्रमेण क्षेत्राणि सर्वदा सस्यपूर्णांनि (सन्ति), या धरित्री शुष्का कण्टकावृता (च आसीत्) (सा) सरसा जाता |

**इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है** –

उन दोनों (किसान तथा उसकी पत्नी) के परिश्रम से खेत सदा फसलों से भर जाते हैं | धरती जो पहले सूखी व् काँटों से भरी थी अब हरी – भरी हो जाती है | |

शाकमन्नं फलं दुग्धं दत्त्वा सर्वेभ्य एव तौ |  
क्षुधा-तृषाकुलौनित्यं विचित्रौ जन-पालकौ || 6 ||

**अन्वय**: (Prose Order)

तौ सर्वेभ्य: एव शाकम् अन्नम् फलं दुग्धं (च) दत्त्वा नित्यं क्षुधा-तृषाकुलौ (स्त:) तौ विचित्रौ जन-पालकौ (स्त:)

**इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है** –

वे दोनों सब को सब्जी, अन्न, फल –दूध (आदि) देते हैं (किन्तु) स्वयं भूख – प्यास से व्याकुल रहते हैं | वे दोनों विचित्र (अनोखे) जन पालक हैं | (यह एक विडम्बना है की दूसरे की भूख मिटाने वाले स्वयं भूख का शिकार हैं | )

\*\*\*\*\*\*\*\*\*